E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact - 5.675

AKSHARA

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

January - March 2023 Volume 04 Issue I

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

January-March 2023 Volume 04 Issue I SJIF Impact- 5.67

Sr. No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
27	दूधनाथ सिंह की कहानियों में मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति	मौहम्मद रहबर	97
28	आधुनिक युग के बिखरते मध्यवर्गीय परिवार की त्रासदी	प्रा.हिरा पोटकुले	102
29	रामचंद्र शुक्ल के निबंध करुणा की वर्तमान में प्रासंगिकता	डॉ. पूर्णिमा अग्रवाल	105
30	ऊर्जा का नवीनीकृत प्रयोग : एक अध्ययन	अफरोज खान डॉ. विद्युत प्रकाश मिश्रा	109
31	शोध की गिरावट के कारण एवं सुधार	डॉ. नरेश कुमार	111
32	उत्तराखण्ड में संचार के परंपरागत साधन	राजेन्द्र सिंह क्वीरा	115
33	अद्भुत युवती की मर्मस्पर्शी कहानीः 'छाया मत छूना मन'	प्रतिमा	118
34	नव्या अर्थव्यवस्थेच्या बळीची दु:खद कहाणी : बारोमास	प्रा. काशीनाथ विठ्ठलराव तरासे	120
35	ग्रामीण भागातील कौमार्यावस्थेतील विद्यार्थिनींना लैंगिक शिक्षण देण्याच्या गरजेसंबंधीचा अभ्यास	प्रा. अर्चना संतोष नाळे	124
36	समानतेवर आधारित समाज रचनेसाठी शिक्षणाची समान संधी देणे विषयक शिक्षण व्यवस्थेची उपाययोजनात्मक भूमिका	शीतल मोहन राठोड	127
37	मानवी हक्क आणि भारतीय संविधान	प्रा.डॉ.ताराचंद माधव सावसाकडे	133
38	स्वातंत्र्यपूर्व काळातील मराठी सामाजिक कांदबरी समिक्षा (यमुना पर्यटन,पण लक्षात कोण घेतो ?, ब्राम्हणकन्या, विधवाकुमारी या कादंबऱ्यांच्या संदर्भात)	डॉ.कैलास बुधा वाघ	139
39	क्रिप्टो करन्सी : प्रारंभ आणि भवितव्य	प्रा. डॉ. चंद्रकांत बन्सी माळी	142
40	स्त्री शिक्षणातून सक्षमीकरणाची वाटचाल: दशा व दिशा	प्रा.सौ. नीता राजेंद्र चोरडिया	145
41	चिपळूणकरांच्या 'निबंधमाले' चा पुनर्विचार	प्रा. मोरेश्वर नेरकर	151

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January-March 2023 Volume 04 Issue I SJIF Impact- 5.67

28 आधुनिक युग के बिखरते मध्यवर्गीय परिवार की त्रासदी

प्रा.हिरा पोटकुले
हिंदी विभाग,
कला,विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय शिवाजीनगर गढी,तह.गेवराई जि.बीड महाराष्ट्र।

भारतीय संस्कृति का सबसे विश्वसनीय आधार है,परिवार। यही परिवार आज बिखरते नजर आ रहा है। उषा प्रियंवदा जी ने अपनी कहानियों में परिवारिक जीवन की परिवर्तित व्यवस्था, प्रेम संबंध और बदलते मानवीय संबंधों की बहुत सुंदर व्याख्या की है। आधुनिकता के इस दौर में अतिव्यस्तता से भरे व्यक्ति की दशा और दिशा, दो पीढ़ियों के बीच हो रहे बदलाव और टकराव का मार्मिक चित्रण 'वापसी' कहानी में प्रस्तुत है। 'वापसी' कहानी के माध्यम से उषा जी ने हमारे समाज के हजारों गजाधर में से एक की वेदना, पीड़ा, संत्रास को हमारे सामने रखा है। जिसमें हमें समकालीन और वर्तमान परिवार के खोखलेपन का वास्तविक चेहरा स्पष्ट रूप से दिखने लगा है, जो वर्तमान परिवारों का कटु सत्य है। प्रस्तुत कहानी हमारे समाज के मध्यवर्गीय परिवार के टूटन की कहानी है जिसमें नई पीढ़ी– पुरानी पीढ़ी को या युवा वर्ग आपने ही बुजुर्गों को अवमानना, अकेलेपन की जिंदगी बिताने के लिए मजबूर करता है। परिवार की समस्याओं,विघटनकारी स्थिति, परिवार की मानसिकता एवं बुजुर्गों की उपेक्षा का चित्रण सटीक भाषा में किया है।

उषा प्रियंवदा जी की सभी कहानियां मध्यवर्गीय जीवन के सुख–दुख, आशा– निराशा एवं उनके जीवन संघर्ष को अंकित करती है। स्त्रियों की दशा– नौकर पेशा अकेले रहनेवाली स्त्री, हॉस्टल में पढ़ने वाली छात्राओं का जीवन, विदेश जानेवाली स्त्री जीवन की पीड़ा, संत्रास से लेकर पुरानी और नई पीढ़ी के टकराव का सूक्ष्मा चित्रण किया है। वापसी कहानी उषा प्रियंवदा जी की कालजयी कहानी है, जिसमें उन्होंने विघटित होते हुए संयुक्त परिवार को सफलतापूर्वक उभरा है। वापसी कहानी के नायक गजाधर बाबू का भरा– पूरा परिवार है। उनके परिवार में उनके साथ उनकी पत्नी दो बेटे अमर और नरेंद्र, दो बेटियां कांति व बसंती और बहू है। गजाधर बाबू रेलवे में स्टेशन मास्टर की नौकरी पर थे। पैंतीस साल की नौकरी के बाद रिटायर होकर अपने घर अपने परिवार के साथ रहने की इच्छा लिये लौटते हैं ।इन वर्षों में से अधिकांश समय उन्होंने अकेले रहकर काटा था ताकि उनका परिवार शहर में सुख सुविधाओं के बीच रह सके। उन्हें किसी प्रकार की कमी ना हो पाये। रिटायर होने के बाद रेलवे क्वार्टर का वह कमरा जिसमें उन्होंने कितने ही वर्ष बिताए थे उनका सामान हट जाने से कुरुप और भद्दा लग रहा था।आंगन में रोपे पौधे भी जान पहचान के लोग ले जाने के कारण मिट्टी बिखरी पड़ी थी। यह देखकर गजाधर बाबू थोडे माहूस होते हैं पर पत्नी और बच्चों के साथ रहने की कल्पना में यह बिछोह एक दुर्बल लहर की तरह गायब हो गया। वह सोचते हैं कि अब जिंदगी के बचे दिन अपने परिजनों के साथ प्यार और आराम से बिताएंगे।

अब कितने वर्षों बाद वह अवसर आया था, जब वह फिर उसी स्नेह और आदर के मध्य रहने जा रहे थे। एक सुंदर परिवार का सपना संजोए वे घर लौटे तो वे पाते हैं कि परिवार के लोग अपने– अपने ढंग से जी रहे हैं। इतवार का दिन था और उनके सब बच्चे इकट्ठा होकर नाश्ता कर रहे थे। अंदर से आ रही कहकहों की आवाज सुनकर गजाधर बाबू के सूखे चेहरे पर स्निग्ध मुस्कान आ गई। उसी तरह मुस्कुराते हुए वह बिना खासे अंदर चले गए। उनको देखते ही वहां पर सन्नाटा छा गया। गजाधर बाबू ने मुस्कुराते हुए उन लोगों को देखा और बोले लेकिन उनमें से किसी ने भी उनके साथ बात आगे नहीं बढ़ाई। इससे उनको अजीब सा महसूस होता है, "गजाधर बाबू ने चाहा था कि वह भी इस मनोविनोद में भाग लेते पर उनके आते ही जैसे सब कुंठित हो चुप हो गये, उससे उनके मन में थोड़ी– सी खिन्नता उपज आयी।... बहु चुपचाप पहले ही चली गई थी, अब नरेंद्र भी चाय का आखरी घूंट पीकर उठ खड़ा हुआ, केवल बसंती पिता के लिहाज में चौके में बैठी मां की राह देखने लगी।"(1)गजाधर बाबू नौकरी से अवकाश पाकर परिवार के साथ प्यार बांटने और प्यार पाने का सपना लिये आये थे, यहां तो उनके साथ बात करने की भी चाह नहीं है।

गजाधर बाबू जब नौकरी पर अकेले थे तो परिजनों को याद करते थे और आज उन्हीं परिजनों में अकेले बैठकर चाय नाश्ते का इंतजार कर रहे हैं। इस भरे– पूरे परिवार में उन्हें गनेशी की याद आती है, "रोज सुबह पैसेंजर आने से पहले वह गर्म– गर्म पूरिया और जलेबी बनाता था। गजाधर बाबू जब तक

Scanned with CamScanner

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429
January-March 2023 Volume 04 Issue I
SJIF Impact- 5.67

उठकर तैयार होते उनके लिए जलेबियां और चाय लाकर रख देता था। चाय भी कितनी बढ़िया, कांच के गिलास में ऊपर तक लबालब भरी, पुरे ढाई चम्मच चीनी और गाढी मलाई। पैसेंजर भले ही रानीपुर लेट पहुंचे गनेशी ने चाय पहुंचाने में कभी देर नहीं की। क्या मजाल कि कभी उससे कुछ कहना पड़े।"(2)

गजाधर बाबू जब नौकरी पर थे तब अपने परिजनों के लिए शहर में एक घर बनवाया था ताकि शहर में रहते समय बीवी बच्चों को तकलीफ ना हो। उसी घर में सब के लिए अपनी अपनी जगह है पर गजाधर बाबू के रहने के लिए कोई स्थान नहीं बचा था। जिस प्रकार में मेहमान के लिए कुछ अस्थाई प्रबंध किया जाता है उसी प्रकार गजाधर बाबू की बैठक में अस्थाई व्यवस्था कर दी गई थी। "जैसे किसी मेहमान के लिए कुछ स्थाई प्रबंध कर दिया जाता है उसी प्रकार बैठक में कुर्सियों को दीवार से सटाकर बीच में गजाधर बाबू के लिए पतली सी चारपाई डाल दी गई थी गजाधर बाबू उस कमरे में पड़े पड़े कभी–कभी अनायास ही इस अस्तित्व का अनुभव करने लगते। उन्हें याद आती रेलगाडियों की जो आती और थोड़ी रुक कर किसी और लक्ष्य की ओर चली जाती।"(3) वृद्धावस्था में परिवार और पत्नी का साथ चाहने वाले व्यक्ति के साथ ऐसा होता है तो निसंदेह उसका मोहभंग होकर मानवीय संवेदनाएं बिखर जाती है।

गजाधर बाबू पत्नी की तकलीफ देखकर बहू और बेटी को खाना बनाने के लिए कहते हैं। बहू और बेटी जानबूझकर कर अपनी जिम्मेदारी अच्छी तरह से नहीं निभाती क्योंकि उन्हें काम करना ही नहीं है। गजाधर बाबू पत्नी के शिकायत भरे स्वर से आहत होते है। उनकी पत्नी हरबार तंगी का अनुभव कराती है। परंतु उसकी बातों में सहानुभूति का पूर्ण अभाव गजाधर बाबू को बहुत खटकता है। जैसे कि परिवार के सब परेशानियों के लिए वही जिम्मेदार थे। उन्हें इस बात का बहुत दुख होता है कि फिर भी अपने आप को संभालकर अपनी आंतरिक अभिव्यक्ति के साथ पत्नी को कहते हैं "तुम्हें किस बात की कमी है अमर की मां–घर में बहू है, लड़के–बच्चे हैं सिर्फ रुपए से आदमी अमीर नहीं होता।" पत्नी उन्हें ताना मारकर आंखें मूंदकर सो गयी। पत्नी के इस व्यवहार से गजाधर बाबू बहुत आहत होते हैं। वह बैठे हुए पत्नी को देखते रह गए–"यही थी क्या उनकी पत्नी जिसके हाथों के कोमल स्पर्श, जिसकी मुस्कान की याद में उन्होंने संपूर्ण जीवन काट दिया था? उन्हें लगा कि वह लावण्यवती जीवन की राह में कहीं खो गयी और उसकी जगह आज जो स्त्री है, वह उनके मन और प्राण के लिए नितांत अपरिचित है।"(4)

गजाधर बाबू जिन्हें अपना मानते वही लोग गजाधर बाबू का एक शब्द भी सुनना पसंद नहीं करते। इस घर में उनकी मौजूदगी उन्हें खलती है। सभी को गजाधर बाबू से शिकायतें बहुत है। उन्हें पत्नी से पता चलता है कि अमर अलग होने की सोच रहा है। तब गजाधर बाबू पत्नी से पूछते हैं कि हमारे आने से पहले भी कभी ऐसी बात हुई थी? पत्नी ने सिर हिला कर जताया कि नहीं क्योंकि पहले अमर घर का मालिक था बहू को कोई रोक–टोक न थी, अमर के दोस्तों का प्रायः यही अड्डा जमा रहता था। अंदर से चाय–नाश्ता तैयार होकर आता था उन्हें कोई तकलीफ ही नहीं थी। बसंती को भी वही अच्छा लगता था। पापा का उसे खाना बनाना और बाहर मत जाना कहने पर आपत्ति है। फिर भी गजाधर बाबू समझदारी से पत्नी से कहते हैं कि अमर को जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। लेकिन अगले ही दिन उन्होंने पाया कि बैठक में उनकी चारपाई नहीं है। उन्होंने पत्नी की कोठरी में झांका तो आचार, रजाइयों और कनस्तरों के बीच अपनी चारपाई दिखाई दी। वह कुछ खाए बिना ही अपनी चारपाई पर लेट गये। उन्हें लगा कि वह जिंदगी द्वारा ठगे गए हैं। उन्होंने जो चाहा उसमें से उन्हें एक बूंद भी नहीं मिली। वह निश्चय करते हैं कि अब घर के किसी बात में दखल नहीं देंगे। "यदि गृहस्वामी के लिए पूरे घर में एक चारपाई की जगह यही है तो यही पड़े रहेंगे। अगर कहीं और डाल दी गई तो वहां चले जाएंगे। बच्चों के जीवन में उनके लिए कोई स्थान नहीं तो अपने ही घर में परदेसी की तरह रहेंगे... और उस दिन के बाद सचमुच गजाधर बाबू कुछ नहीं बोले...। पर उन्हें सबसे बड़ा गम यह था कि उनकी पत्नी ने भी उनमें कुछ परिवर्तन लक्ष्य नहीं किया। वह मन ही मन कितना भार ढोते रहे हैं इससे वह अनजान ही बनी रही।"(5) परिजनों में उनकी पत्नी की उपेक्षा वे सह नहीं पाते। उन्होंने अनुभव किया कि वह पत्नी व बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र है। जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी को मांग में सिंदूर डालने का अधिकार मिलता है वह अगर घी और चीनी के डिब्बों में इतनी रमी हुई है कि अब वही उसकी संपूर्ण दुनिया बन गई है, उसमें पति का कोई स्थान ही नहीं है।

गजाधर बाबू की सारी खुशी एक गहरी उदासीनता में डूब गई। इस घर में उनकी उपस्थिति इस कदर असंगत लगने लगी थी जैसे सजी हुई बैठक में उनकी चारपाई। इतने सब निश्चयों के बावजूद भी गजाधर बाबू एक दिन बीच में दखल दे बैठे–उन्होंने नौकर छुडा दिया। इस बात का घर

Scanned with CamScanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
January-March 2023 Volume 04 Issue I SJIF Impact- 5.67

में बवाल मच जाता है। किसी को भी अपने काम खुद करने की आदत नहीं है। इस बात को लेकर नरेंद्र मां से कहने लगा, "अम्मा बाबूजी से कहती क्यों नहीं? बैठे–बिठाए कुछ नहीं तो नौकर ही छुड़ा दिया। अगर बाबूजी यह समझे कि मैं साइकिल पर भी गेहूं रख आटा पिसाने जाऊंगा तो मुझसे यह नहीं होगा।" हां अम्मा– बसंती का स्वर था, "मैं कॉलेज भी जाऊं और लौटकर घर में झाड़ू भी लगाऊं, यह मेरे बस की बात नहीं है। "बूढ़े आदमी हैं," अमर मुनमुनाया, "चुपचाप पड़े रहे। हर चीज में दखल क्यों देते हैं!" "कुछ नहीं सूझा तो तुम्हारी बहू को ही चौके में भेज दिया। वह गयी तो पन्द्रह दिन का राशन पांच दिन में ही बना कर रख दिया।"(6) गजाधर बाबू ने सब सुन लिया पर चुप, आंखें बंद किए लेटे रहे। मनुष्य के जीवन में धन का महत्व बढ़ने के कारण व्यक्ति अधिकाधिक धन कमाने के लिए गांव से नगरों महानगरों, की ओर भाग रहा है। धनालिप्सा एवं काम की व्यस्तता के कारण व्यक्ति के जीवन की आत्मीयता, रागात्मकता खत्म हो गई है। गजाधर बाबू रेलवे की नौकरी करते हुए घर से इसलिए दूर रहे की अपने परिवार का भरण पोषण अच्छी तरह से कर सके। बच्चों की अच्छी शिक्षा,अच्छा भविष्य दे सके। वही परिवार उनके अवकाश ग्रहण करने के उपरांत अवांच्छित व्यक्ति के रूप में देखता है। उनका सम्मान तो दूर की बात है हर क्षण उन्हें अपमान सहना पड़ता है।

अपने ही परिजनों से मिली अवमानना, अकेलेपन की जिंदगी से तंग आकर वे रामजीमल की चीनी मिल में नौकरी करने का निश्चित करते हैं। अपनी पत्नी को बताते हैं कि मुझे नौकरी मिल गई है। खाली बैठे रहने से तो चार पैसे घर में आए वही अच्छा है। और धीमे से स्वर में कहते हैं, "मैंने सोचा था कि बरसों तुम सबसे अलग रहने के बाद अवकाश पाकर परिवार के साथ रहूंगा। खैर, परसों जाना है। तुम भी चलोगी? "मै?" पत्नी ने सकपकाकर कहा, "मैं" चलूंगी तो यहां का क्या होगा? इतनी गृहस्थी, फिर सयानी लड़की..." बात बीच में काट गजाधर बाबू ने थके, हताश स्वर में कहा, "ठीक है, तुम यहीं रहो। मैंने तो ऐसे ही कहा था।" और गहरे मौन में डूब गए।"(7) भारतीय परिवारों में स्त्री हमेशा अपने त्याग, प्रेम एवं समर्पण द्वारा परिवार के सदस्यों के लिए अपना सुख, चैन भूल जाती हैं, गजाधर बाबू की पत्नी भी अपना पारिवारिक दायित्व अच्छी तरह से निभाती है परंतु पति के प्रति जो हर पत्नी के मन में होता है वह एकनिष्ट प्रेम और समर्पण धुंधला सा नजर आता है। वह पति के वृध्दावस्था में पति का साथ छोड़ बच्चों के साथ रहना पसंद करती है। विशेष रूप से उस समय जब उनकी धर्मपत्नी रसोई से उनकी चारपाई यह कहकर निकालती है कि यहां अब चलने–फिरने की जगह नहीं रही।

अतः बदलते वर्तमान परिवेश में वृध्द पिता जिन्होंने अपनी पूरी जिंदगी परिवार की खुशी के लिए घर से दूर रहने रहे, वहीं अकेलेपन और टूटन के शिकार हो रहे हैं। बुजुर्ग पीढ़ी की यह हालत अत्यंत सोचनीय है। वृद्धावस्था में परिवार और पत्नी का साथ चाहने वाले व्यक्ति के साथ ऐसा होता है तो निस्संदेह उसका मनो मोहभंग होकर मानवीय संवेदनाएं बिखर कर चूर–चूर हो जाती है–जो गजाधर बाबू के साथ हुआ। प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने मध्यवर्गीय परिवारों में हो रहे आधुनिक परिवर्तन और नारी की बदलती भूमिका सूक्ष्मता से विश्लेषित किया है।आधुनिक नगरबोध की उदासी,ऊब, अकेलेपन में व्यक्ति अपने भरे–पूरे परिवार में, भीड़–भाड में अपने को निपट अकेला पाता है। आज ऐसी स्थितियां उत्पन्न हुई है कि न ही पूराने मूल्य पूरी तरह से टूटे है और न ही नये मूल्य पूर्णतः स्थापित हो पाये है, इन दोनों के मध्य आज का मनुष्य अटक–कर रह गया है। परिणामतः शून्यता, एकाकीपन, निराशा, हताशा तथा अजनबीपन आदि अनुभूतिया परिलक्षित होती है। इन समस्याओं से ऊभरने के लिए दोनों पीढीयों को समझदारी से अपनी जिम्मेदारी और भूमिका निभाना आवश्यक है।

संदर्भ सूची :

1. वापसी–उषा प्रियंवदा, कथा द्वादशी, हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ.बा.आं.म.वि.औरंगाबाद पृ.177–178
2. वापसी–उषा प्रियंवदा, कथा द्वादशी, हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ.बा.आं.म.वि.औरंगाबाद पृ.178
3. वापसी– उषा प्रियंवदा, कथा द्वादशी, हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ.बा.आं.म.वि.औरंगाबाद पृ.179
4. वापसी–उषा प्रियंवदा, कथा द्वादशी, हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ.बा.आं.म.वि.औरंगाबाद पृ.180
5. वापसी–उषा प्रियंवदा, कथा द्वादशी, हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ.बा.आं.म.वि.औरंगाबाद पृ.182
6. वापसी–उषा प्रियंवदा, कथा द्वादशी, हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ.बा.आं.म.वि.औरंगाबाद पृ.183
7. वापसी–उषा प्रियंवदा, कथा द्वादशी, हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ.बा.आं.म.वि.औरंगाबाद पृ.184

Scanned with CamScanner